पाठ–1

हम पंछी उन्मुक्त गगन के

–शिवमंगल सिंह 'सुमन'

पाठ का सार

हिंदी काव्य जगत के प्रख्यात कवि श्री शिवमंगल सिंह 'सुमन' के द्वारा रचित कविता 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' उस समय रची गई थी, जब हमारा देश परतंत्र था और अंग्रेज़ी हुकूमत के अत्याचारों के कारण भारतवासियों का जीना मुश्किल हो गया था। वे अपनी इच्छा के अनुसार कार्य नहीं कर सकते थे। भारतवासियों की हालत पिंजरे में बंद पक्षियों की तरह थी। स्वतंत्र रहना प्राणिमात्र का स्वभाव है फिर भला मनुष्य क्यों नहीं स्वतंत्र रहना चाहेगा। कवि कहते हैं कि खुले आकाश में उड़ना हम पक्षियों का स्वभाव है। अत: हम पिंजरे में बद रहकर नहीं गा पाएँगे। यदि हम इस पिंजरे के अंदर चहकना–उड़ना चाहेंगे तो इस पिंजरे की सोने की तीलियों से टकराकर हमारे पंख टूट जाएँगे। हम पक्षी तो नदियों का बहता हुआ पानी पीने वाले हैं। इसलिए हम इस पिंजरे में रखी मैदा नहीं खाएँगे और भूखे–प्यासे मर जाना पसंद करेंगे। हमारे लिए पिंजरे के अंदर सोने की कटोरी में रखी मैदा से कहीं अधिक अच्छी नीम की कड़वी निबौरी है। इस सोने के पिंजरे के अंदर पड़े–पड़े हम उड़ना–फुदकना ही भूल गए हैं। पेड़ों की टहनी पर बैठकर झूला झूलना तो मेरे लिए सपने की बात हो गई। मेरी तो ऐसी इच्छा थी कि इस नीले आकाश की सीमा पाने के लिए इधर से उधर तक उड़ते और सूर्य की लाल किरणों के समान अपनी चोंच खोलकर तारे रूपी अनार के दानों को चुगते। हम जी भर कर खुले आकाश में उड़ना चाहते हैं। निरंतर उड़ते रहने से या तो हमें क्षितिज मिल जाता या फिर उड़ते–उड़ते हम थक जाते और हमारे प्राण ही निकल जाते। हमें परतंत्र करने वालो, हमारी तुमसे यही प्रार्थना है कि तुम चाहो तो हमारे पेड़ की डाली का सहारा तोड़ डालो, हमें रहने के लिए घोंसला न दो, किंतु जब ईश्वर ने हमें उड़ने के लिए पंख दिए हैं तो हमारी स्वतंत्र उड़ान में बाधा मत डालो।

शब्दार्थ

उन्मुक्त = स्वच्छंद, खुला; **पिंजरबद्ध** = पिंजरे में बंद; **कनक–तीलियाँ**= सोने की तीतियाँ; **पुलकित** = उल्लास से भरे, खुश; **कटुक** = कड़वी; **निबौरी** = नीम का फल; **कनक–कटोरी** = सोने की कटोरी ; **स्वर्ण–शृंखला** = सोने की लड़ी (चेन); **फुनगी** = पेड़ की सबसे ऊँची चोटी; **अरमान** = इच्छा, अभिलाभाषा का अंतिम हिस्सा; **तारक–अनार** = तारे रूपी अनार के दाने; **क्षितिज** = वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिले हुए नज़र आते हं।

पाठ–2

दादी माँ

–शिवप्रसाद सिंह

पाठ का सार

'दादी माँ' कहानी हिंदी के प्रसिद्ध लेखक श्री शिवप्रसाद सिंह के द्वारा लिखी गई है। इसमें लेखक ने अपने बचपन की यादों एवं अपनी दादी माँ के स्नेहिल एवं आकर्षक व्यक्तित्व का बड़ा सुंदर वर्णन किया है। लेखक अपने मित्रों की दो तरह की बातों से दुखी होते हैं और उन्हें अपनी दादी माँ की याद आ जाती है। यहीं से कहानी की शुरुआत होती है। गाँव में चारों तरफ़ एक विशेष गंधवाला पानी भरा है। उसमें नहाना लेखक को बहुत अच्छा लगता है। वे खूब नहाते हैं और उन्हें बुखार आ जाता है। दो–दो रजाइयाँ ओढ़ने के बाद रात को बारह बज के बाद बुखार उतरा। दिन में दादी बार–बार उसे छू–छूकर बुखार का पता लगाती हैं। चारपाई के पास बैठती हैं, फिर अनेक प्रकार की जानकारी लेती हैं।

दादी माँ को गाँव की पचासों दवाइयाँ मालूम हैं। अत: जब भी कोई गाँव में बीमार होता है तो दादी वहाँ पहुँच जाती हैं और यहीं बातें करती हैं। वे सफ़ाई का बहुत ध्यान रखती हैं। लेखक के किशन भैया की शादी में वे बहुत उत्साहित रहीं। घर में सारे काम ठीक से हो रहे हैं या नहीं– इसका बहुत ध्यान रखती रहीं। धन्नो द्वारा उधार का पैसा समय पर न चुकाने पर उसे बहुत डाँटती हैं, किंतु अंत में धन्नो को दिया सारा कर्ज माफ़ कर देती हैं तथा उसे दस रुपये और देकर कहती हैं कि ''धन्नो! जैसे तेरी बेटी वैसी मेरी बेटी, दस–पाँच रुपये के लिए जग हँसाई न हो।''

लेखक के घर पैसां की तंगी के कारण उन्होंने अपने पति के हाथों की आखिरी निशानी कंगन को भी दे दिया। वे कड़ाके की सर्दी में भी भीगी साड़ी पहने दीपक जलाकर ईश्वर का ध्यान करती थीं। उनके न रहने की खबर ने लेखक को भाव विह्वल कर दिया।

शब्दार्थ

प्राय: = अकसर; **शिवान** = नाला; **शुभचिंतक** = भला चाहने वाला; **प्रतिकूलता** = अनुकूल परिस्थितियाँ न होना; **शीत–किरणें** = ठंडक प्रदान करने वाली; **धुँधली छाया** = अस्पष्ट छवि; किरणें; **लाई** = मुरमुरा; **जलाशय** = तालाब, पोखर; **मोथा** = एक प्रकार की घास; **हिलोर** = लहर ; **हुड़क** = किसी को काम करने की इच्छा; **विशूचिका** = छूत की बीमारी, हैजा; **लवंग** = लौंग; **नाड़ी** = नब्ज़; **कुनैन मिक्सचर** = बुखार की दवा; **सन** = जूट; **सद्य:** = आज ही, उसी समय; **अदृश्य** = जो दिखाई न दे, गायब; **मेस महाराज** = भोजन बनाने वाला पंडित; **अनुमान** = अंदाजा; **सरसाम** = एक प्रकार की बीमारी; **तिताई** = तीखपन; **निकसार** = निकास की जगह; **कार परोजन** = कार्य का प्रयोजन; **अनुपस्थिति** = मौजूद न होना (काम का उद्देश्य); **निस्तार** = उद्धार; **विह्वल**

= व्याकुल, घबराया हुआ; **आपत्ति** = एतराज; **उरिन** = उऋण (ऋण से मुक्त) ; **भेद** = रहस्य ; **अभयदान** = निडरता का दान, निर्भय रहने का भरोसा; **वात्याचक्र** = भँवर, घटनाओं का सिलसिला; **अतुल** = बहुत अधिक; **श्राद्ध** = पूर्वजों (पुरखों) के लिए किया जाने वाला काम; **पहुआ** = पश्चिम की ओर से आने वाली हवा; **शापभ्रष्ट** = शाप से ग्रस्त; **विलीन** = गायब हो जाना (शाप से पीड़ित); **घिनौनी** = घृणित, बदसूरत; **पाँखें** = पंख; **धूमिल** = धुँधला, हलका; **माघ** = हिंदी का एक महीना, जिसमें कड़ाके की ठंड होती है क्वार, आषाढ़, अगहन, चैत्र आदि हिंदी महीनों के नाम है।

पाठ–4

कठपुतली

–भवानी प्रसाद मिश्र

पाठ का सार

कठपुतली कविता के रचयिता हिंदी के प्रसिद्ध कवि श्री भवानी प्रसाद मिश्र हैं। उन्होंने इस कविता में कठपुतलियों के क्रोध और विरोध का वर्णन किया है। धागों में बँधे-बँधे तथा दूसरों के इशारे पर नाचते-नाचते कठपुतली तंग आ चुकी है। अब उससे और सहन नहीं होता। वह धागों को तोड़कर अपने पैरां पर खड़े होना चाहती हैं। अत: वह स्वतंत्र होना चाहती है। उसकी बात अन्य कठपुतलियों को भी अच्छी लगी। वे भी अपने मन के गीत गाना चाहती हैं। सारी कठपुतलियाँ जब पहली कठपुतली का समर्थन करती हैं तब पहली कठपुतली दोबारा सोचती है कि मैं इन सबकी स्वतंत्रता की जिम्मेदारी उठा पाऊँगी या नहीं।

शब्दार्थ

कठपुतली = काठ की पुतली (गुड़िया) जिसके अंगों में धागे बँधे होते हैं जिनके सहारे उसे नचाया जाता है; **गुस्से से उबलना** = अत्यधिक क्रुद्ध होना; **मन के छंद** = मन के भीतर उठने वाली सुकुमार भावनाएँ, जो कविताओं के रूप में उभरकर सामने आती हैं।

पाठ-6

रक्त और हमारा शरीर

-डॉ. यतीश अग्रवाल

पाठ का सार

'रक्त और हमारा शरीर' डॉ. यतीश अग्रवाल के द्वारा लिखित है। इस पाठ में लेखक ने रक्त को 'भानुमती का पिटारा' कहकर उसके महत्व को दर्शाया है। इसमें बताया गया है कि रक्त की कमी के कारण एनीमिया नामक रोग हो जाता है जिसमें रोगी को थकान तथा कमज़ोरी महसूस होती है। इससे रोगी का मन भी उसके काम में नहीं लगता। इस बीमारी में भूख बहुत कम लगती ह। इस पाठ में एनीमिया रोग के लक्षण तथा एनीमिया रोग से बचने के उपायों का भी वर्णन किया गया है। किसी भी रोग से बचने के लिए स्वच्छता तथा पौष्टिक आहार बहुत महत्वपूर्ण हैं। इनका भी वर्णन है। पाठ के अंत में 'ब्लड बैंक' का महत्व बताते हुए लेखक रक्तदान के दिन सबको प्रेरित करते हैं।

शब्दार्थ

स्लाइड = काँच का एक आयताकार टुकड़ा जिस पर जाँच करने के लिए रक्त डालकर सूक्ष्मदर्शी यंत्र से देखा जाता है; **भानुमती का पिटारा** = वह चीज़ जिसमें भाँति-भाँति की वस्तुएँ मौज़ूद हों; **सूक्ष्मदर्शी** = एक यंत्र जिससे छोटी से छोटी चीज़ भी बड़े स्वरूप में देखी जा सकती है; **एनीमिया** = खून की कमी से होने वाली एक बीमारी का नाम; **जीवनकाल** = आयु; **रोगाणु** = कीटाणु; **आवश्यकतानुसार** = जितनी ज़रूरत हो; **रक्तवाहिका** = रक्त ले जाने वाली धमनी (नस); **लाभप्रद** = फायदेमंद; **आपातस्थिति** = अचानक आई हुई; निराधार = बिना आधार के मुश्किल की स्थिति; **नियमित** = नियम के अनुसार; **पीठ ठोकना** = शाबाशी देना

पाठ-8

शाम-एक किसान

-सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

पाठ का सार

हिंदी के प्रसिद्ध कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने अपनी कविता 'शाम-एक किसान' में जाड़े की शाम को एक किसान के रूप में चित्रित किया है।

कविता के पहले अंश में जाड़े की शाम के प्राकृतिक दृश्य का चित्रण किया गया है। इसमें कवि ने पहाड़ को एक किसान के रूप में चित्रित किया है। इसमें आकाश को किसान के साफ़ा के रूप में, पश्चिम में अस्त होते सूर्य को चिलम के रूप में, पहाड़ पर बहती नदी को किसान के घटनों पर पड़ी एक चादर के रूप में, लाल रंग क फूलां से लदे पलाश के जंगल को लाल अंगारों से दहकती अँगीठी के रूप में तथा पूर्व की दिशा में गहराते हुए अँधेरे को झुंड में सिमटकर बैठी हुई भेड़ों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह पूरा दृश्य शांत है।

कविता के दूसरे अंश में मोर के अचानक बोलने की आवाज़ आती है। मानो किसी ने आवाज़ लगाई- 'सुनते हो!' और इसके बाद यह दृश्य घटना में बदल जाता है। पहाड़ रूपी किसान की सूरज रूपी चिलम उलट जाती है अर्थात सूरज डूब गया। लाल फूलों से पलाश के जंगल रूपी अँगीठी बुझ गई अर्थात सूरज के छिपने से पलाश का लाल जंगल दिखाइ देना बंद हो गया। कुछ धुआँ-सा उठा और फिर रात का अँधेरा छा गया।

शब्दार्थ

साफ़ा = सिर पर पगड़ी के रूप में बाँधने का कपड़ा; **चिलम** = मिट्टी की सिगार जिसमें तंबाकू रखकर पीते हैं; **दहकना** = सुलगना, जलना; **पलाश** = लाल रंग के टेसू के फूल; **सिमटा** = इकट्ठा हुआ; **गल्ले-सा** = झुंड-सा; **औंधी** = उलटी

पाठ–9

चिड़िया की बच्ची

–जैनेंद्र कुमार

पाठ का सार

'चिड़िया की बच्ची' कहानी के रचयिता 'श्री जैनेंद्र कुमार जी' हैं। कहानी इस प्रकार है– सेठ माधवदास एक दिन शाम के समय कोठी के बाहर अपने बगीचे में बैठे थे। उनके पास बहुत धन–दौलत थी फिर भी मन कुछ खाली–खाली–सा था। उसी समय गुलाब की डाली पर एक चिड़िया की बच्ची आकर बैठ गई। माधवदास को वह चिड़िया की बच्ची बहुत प्यारी लगी। उन्होंने चिड़िया से कहा कि तुम तो बहुत अच्छी आई। यह बगीचा तुम सबके लिए ही बनवाया गया है। तुम बेखटके आया करो। इस पर चिड़िया की बच्ची डर जाती है। वह कहती है कि मुझे मालूम नहीं था कि यह बगीचा आपका है। मैं पलभर साँस लेने के लिए यहाँ टिक गई थी। मैं अभी चली जाऊँगी।

सेठ माधवदास को वह चिड़िया इतनी अच्छी लगी कि उन्होंने उसे अपनी कोठी में रखना चाहा। उन्होंने उसे सुख–सुविधाओं का लालच दिया और कहा कि उनकी कोठी में वह जो कुछ माँगेगी, वह सब कुछ उसे मिलेगा। चिड़िया ने कहा कि वह अपनी माँ के पास जाएगी। उसकी माँ उसका इंतज़ार कर रही होगी। सेठ ने उसे बातों में उलझाकर रोकना चाहा तो वह बोली कि मेरा घर दूर है। अँधेरा हो जाएगा और उसे रास्ता नहीं दिखाई देगा।

इस पर सेठ ने कहा कि अरे! अभी बहुत समय है। चली जाना किंतु चिड़िया की बच्ची जाने के लिए बहुत उतावली हुई तो सेठ ने उससे भाई–बहनों के बारे में पूछकर रोकना चाहा और घर के नौकर को बटन दबाकर चिडिया को पकड़ने के लिए बुला लिया। फिर चिड़िया को बातों में उलझाकर नौकर को चिड़िया को पकड़ने के लिए इशारा कर दिया। सेठ स बातें करती चिड़िया कुछ अनहोनी की आशंका से डर रही थी कि तभी उसे कठोर–स्पर्श का अहसास हुआ और वह तुरंत उड़कर अपनी माँ के पास पहुँच गई और भय के कारण सुबकते हुए ओ माँ... ओ माँ कहती हुई माँ से चिपक गई।

शब्दार्थ

व्यसन = बुरी आदतें जैसे शराब आदि पीना; **अभिरुचि** = चाह, शौक; **मसनद** = तकिया; **तृप्ति** = संतोष; **विनोद–चर्चा** = मन बहलाने की बातें; **आन बैठी** = आ बैठी; **स्याह** = काला; **चित्र–विचित्र** = रंग–बिरंगी; **स्वच्छंदता** = आज़ादी; **बेखटके** = बिना किसी डर के; **संकोच** = झिझक; **बोध** = ज्ञान; **प्रफुल्लित** = प्रसन्न; **बहुतेरी** = बहुत; **बाट देखना** = इंतजार करना; **निरी** = बिल्कुल; **मालामाल** = धन–दौलत से भरपूर, समृद्ध; **जतन** = यत्न, कोशिश; **उजेला** = उजाला; **चौकन्नी** = चौकस, सावधान; **तृष्णा** = चाह, इच्छा।

विशेषण के भेद

(सूत्र - गुसा पास कर)

गु - गुणवाचक विशेषण ⟶ गुण अथवा दोष

सा - सार्वनामिक विशेषण ⟶ संज्ञा से पहला शब्द सर्वनाम

पा - परिमाणवाचक विशेषण ⟶ जिसे उंगलियों पर न गिन सकें।

स - संख्यावाचक विशेषण ⟶ जो उंगलियों पर गिना जा सके।

परिमाणवाचक विशेषण

निश्चित परिमाणवाचक	अनिश्चित परिमाणवाचक
उदाहरण- दुकान से एक किलो तेल ले आओ।	**उदाहरण**- रसोईघर से कुछ चीनी ले आओ।

संख्यावाचक विशेषण

निश्चित संख्यावाचक	अनिश्चित संख्यावाचक
उदाहरण- दो किलो आम ले आओ।	**उदाहरण**- थोड़े सेब ले आओ।

शब्द विचार

वर्णों के सार्थक मेल से बनी स्वतंत्र और सार्थक ध्वनि शब्द कहलाती है।

कमल और कमल शब्दों की रचना वर्णों के सार्थक मेल से हुई है जबकि लमक का कोई अर्थ नहीं।

उत्पत्ति के आधार पर

शब्द के भेद

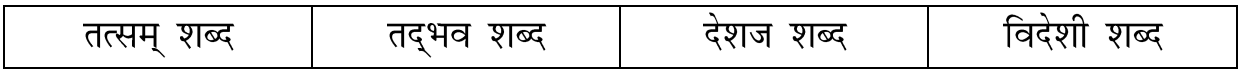

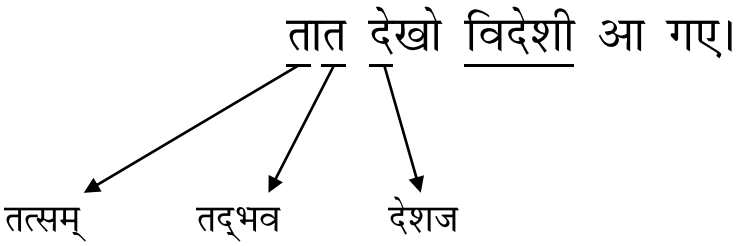

1. **तत्सम् शब्द**– ये शब्द संस्कृत से बिना किसी परिवर्तन के हिन्दी में ले लिए गए।

   जैसे– सूर्य

   कुछ तत्सम् शब्द– संध्या, छिद्र, कर्ण, मीत, ग्राम, प्रस्तर, रात्रि, जिह्वा आदि।

2. **तद्भव शब्द**– ये संस्कृत के वे शब्द हैं जो परिवर्तित होकर हिन्दी में प्रचलित हो गए। जैसे– सूरज

   कुछ तद्भव शब्द– जीभ, रात, छेद, सांझ, मित्र, पत्थर, सपना आदि।

3. **देशज शब्द**– जो शब्द क्षेत्रीय प्रभाव के कारण हिन्दी में प्रचलित हो गए वे देशज शब्द कहलाए। जैसे– डिबिया, जूता, लकड़ी आदि।

कुछ देशज शब्द– खिचड़ी, तोंद, खुरपी, रोटी, बेटा आदि।

4. **विदेशी शब्द**– जो शब्द संसार के विभिन्न देशों की भाषाओं से हिंदी में आ गए वे विदेशी या विदेशज अथवा आगत शब्द कहलाए।

जैसे– लालटेन, अमरूद आदि।

<u>कुछ विदेशी शब्द</u>

अरबी– अखबार, अदालत, इस्तीफा, औरत, कब्र, कसम, कसाई, कागज़।

फ़ारसी– अंदाजा, अचार, आमदनी, कारीगर, कमर, खराब, खरीद, गरदन, गुलाब, चीज, जगह, कद्दू

अंग्रेजी– अपील, आइस्क्रीम, ऑर्डर, इंच, कंट्रोल, कार्बन, क्रिकेट, ड्राइवर, टिकट

पुर्तगाली– अलमारी, तौलिया, परात, पादरी, साबुन, कमरा

तुर्की– कुरता, कुली, कैंची, चाकू, तोप, बंदूक, बेगम

फ्रांसीसी– काजू, कूपन, कारतूस

चीनी– चाय, लीची

जापानी– रिक्शा

सर्वनाम

संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे– मैं, तुम, हम आदि।

सर्व	+	**नाम**
सबका		नाम

सर्वनाम के भेद

एक पुरुष (1) गोलगप्पे खाने का निश्चय (2) करता है। गोल–गप्पे वाले के गंदे हाथ देखकर खाने का अनिश्चय (3) करता है और स्वयं से प्रश्न (4) पूछता है कि मैं क्या खाने वाला था। वापिस आते हुए उसे संबंधी (5) मिलते हैं जो उसके बहुत निजी (6) हैं।

पुरुष	–	पुरुषवाचक सर्वनाम
निश्चय	–	निश्चयवाचक सर्वनाम (संकेतवाचक सर्वनाम)
अनिश्चय	–	अनिश्चयवाचक सर्वनाम
प्रश्न	–	प्रश्नवाचक सर्वनाम
संबंधी	–	संबंधवाचक सर्वनाम
निजी	–	निजवाचक सर्वनाम

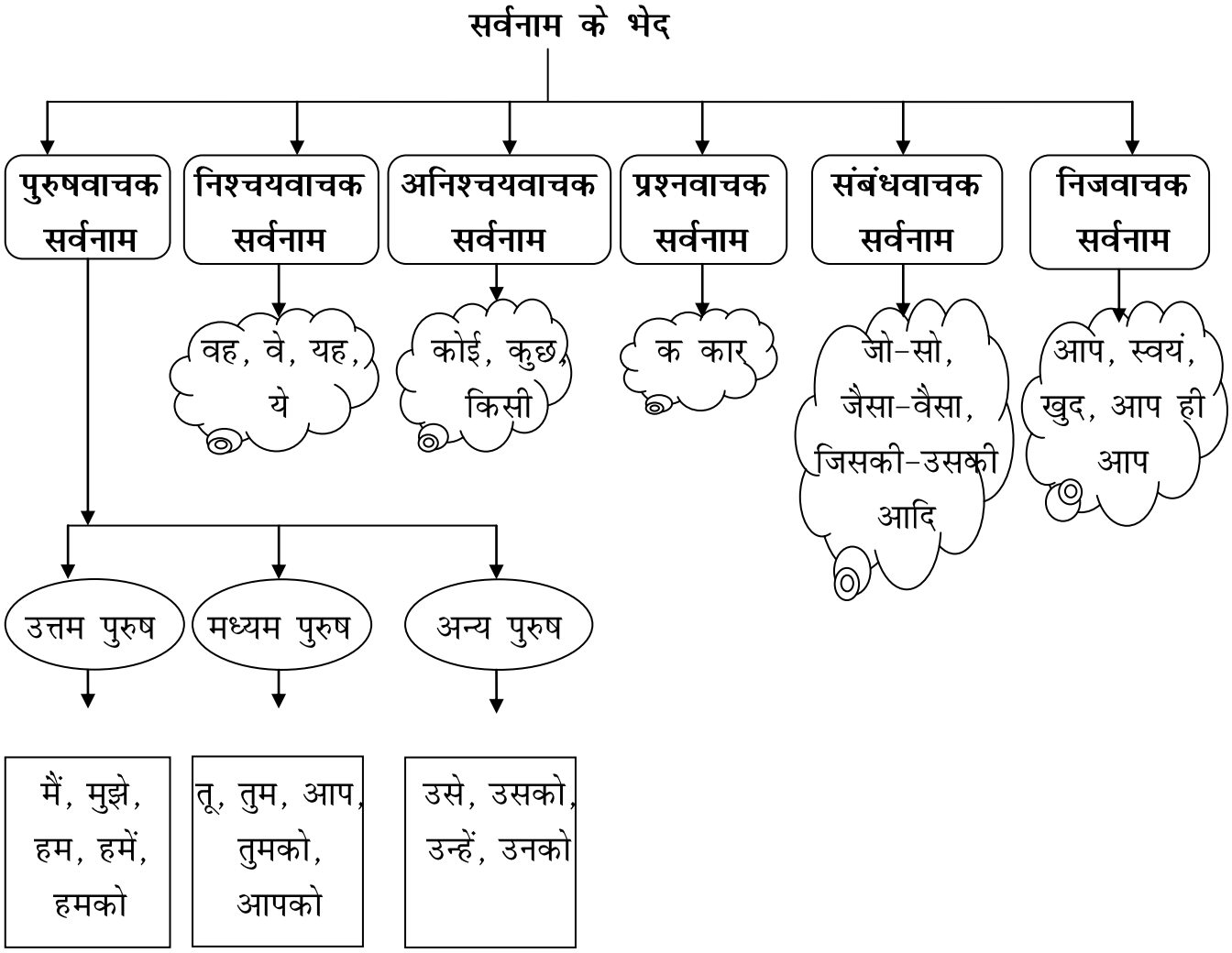
सर्वनाम के भेद
पुरुषवाचक सर्वनाम
निश्चयवाचक सर्वनाम
अनिश्चयवाचक सर्वनाम
प्रश्नवाचक सर्वनाम
संबंधवाचक सर्वनाम
निजवाचक सर्वनाम
वह, वे, यह, ये
कोई, कुछ, किसी
क कार
जो-सो, जैसा-वैसा, जिसकी-उसकी आदि
आप, स्वयं, खुद, आप ही आप
उत्तम पुरुष
मध्यम पुरुष
अन्य पुरुष
मैं, मुझे, हम, हमें, हमको
तू, तुम, आप, तुमको, आपको
उसे, उसको, उन्हें, उनको

उदाहरणार्थ

वाक्यों के माध्यम से सर्वनाम के भेदों की पहचान करना।

1. उसने बताया था कि वह अगले माह शिमला जाएगा।

   पुरुषवाचक सर्वनाम → उसने, वह

2. यह मेरा घर है।

   निश्चयवाचक सर्वनाम → यह

3. बाहर कोई खड़ा है।

   अनिश्चयवाचक सर्वनाम → कोई

4. तुम इतनी रात को कहाँ से आ रहे हो?

   पुरुषवाचक सर्वनाम → कहाँ

5. जैसी करनी, वैसी भरनी

   संबंधवाचक सर्वनाम → जैसी - वैसी

6. यह पत्र मैंने स्वयं लिखा है।

   निजवाचक सर्वनाम → स्वयं

संज्ञा

किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं। जैसे- रामायण, लड़का, कड़वाहट आदि।

संज्ञा का संबंध सीधे-सीधे किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, स्थान या भाव के नाम से होता है।

संज्ञा के भेद

प्रत्येक व्यक्ति किसी जाति से संबंध रखता है तथा जाति के लिए उसके मन में भाव होते हैं।

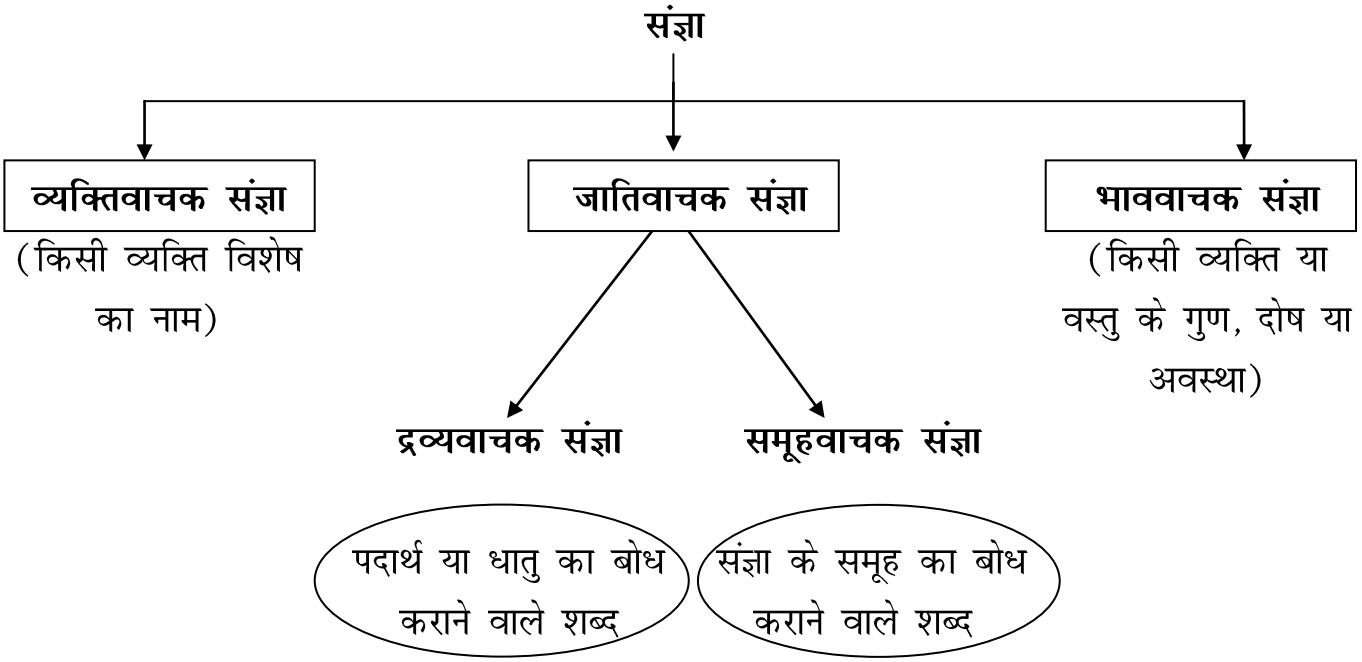

उदाहरणार्थ

1. राजीव की सच्चाई ने सबका दिल जीत लिया।

   राजीव → व्यक्तिवाचक संज्ञा

2. जंगल में शेर राजा होता है।

   शेर → जातिवाचक संज्ञा

3. करेले में कितनी कड़वाहट है।

   कड़वाहट → भाववाचक संज्ञा

4. सैनिक अपनी सेना के साथ बोर्डर पर गए।

   सैनिक → जातिवाचक संज्ञा

   सेना → समूहवाचक संज्ञा

5. सुहाना के गले में सोने का हार है।

   सुहाना → व्यक्तिवाचक संज्ञा

   सोना → द्रव्यवाचक संज्ञा

वर्ण–विचार

उस छोटी से छोटी मूल ध्वनि को वर्ण कहते हैं, जिसके खण्ड (तोड़ा) न किए जा सकें।

जैसे– अ, ई, ऊ, ऐ, क्, च्, ट्, त् + प्

वर्णमाला

वर्णमाला शब्द का अर्थ है – वर्णों का समूह या कहा जा सकता है वर्णों का निश्चित समूह।

उदाहरणार्थ–

स्वर

आ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

अयोगवाह

अं अः

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
	ष	स	ह	

अन्य व्यंजन

ड़ ढ़

संयुक्त व्यंजन

क्ष त्र ज्ञ श्र

✦ प्रत्येक व्यंजन के साथ स्वर जुड़ा होता है क्योंकि व्यंजन दो वर्णों के मेल से बनता है।

उदाहरण– क = क् + अ

म = म् + अ

व्यंजन के साथ स्वर का जो रूप जुड़ा होता है, उसे मात्रा कहते हैं।

स्वर	अ	आ	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्राएँ	–	ा	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ

✦ 'अ' स्वर की कोई मात्रा नहीं होती लेकिन सभी व्यंजनों का उच्चारण अथवा लेखन 'अ' मिलाकर ही किया जाता है। अगर व्यंजन में 'अ' नहीं है तो वह वर्ण हो जाएगा और उसके नीचे हल चिह्न (्) लगा होगा। जैसे- क्, ल्, व्

✦ 'र' के साथ 'उ' और 'ऊ' की मात्राएँ मध्य से जोड़ी जाती है।

उदाहरण–

र् + उ = रु (रुपया)

र् + ऊ = रू (रूप)

✦ 'श' के साथ 'ऋ' की मात्रा जोड़कर 'शृ' बनाया जाता है।

श् + ऋ = शृ

वर्ण-विच्छेद

किसी शब्द के वर्णों को अलग-अलग करके लिखना वर्ण-विच्छेद कहलाता है।

वर्ण-विच्छेद का अभ्यास करने से शब्दों की सही वर्तनी और उनके उच्चारण की जानकारी प्राप्त होती है।

उदाहरणार्थ

क्ष = क् + ष् + अ

त्र = त् + र् + अ

ज्ञ = ज् + ञ् + अ

श्र = श् + र् + अ

क = क् + अ

प = प् + अ

ल = ल् + अ

पर्व = प् + अ + र् + व् + अ

प्रण = प् + र् + अ + ण् + अ

ट्रक = ट् + र् + अ + क् + अ

इनके माध्यम से 'र' के उच्चारण का सही स्थान ज्ञात होता है।

यहाँ 'र' का उच्चारण पूर्ण व्यंजन 'र' नहीं बल्कि 'र्' के रूप में हो रहा है।

वाक्य = व् + आ + क् + य् + अ

मक्का = म् + अ + क् + क् + आ

यदि शब्द में व्यंजन आधा हो तो 'अ' उसके साथ नहीं लगाया जाता।

वसंत = व् + अ + स् + अं + त् + अ

गाँव = ग् + आँ + व् + अ

अतः = अ + त् + अः

'अ' अपने आप में पूर्ण स्वर है और स्वरों को खंडों में नहीं बाँटा जा सकता। अनुस्वार (ं), अनुनासिक (ँ) तथा विसर्ग (:) स्वर 'अ' के या अन्य स्वरों के साथ ही दर्शाए जाते हैं।